PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 1

पारंपरिक बिम्बों का अनुशीलन

डॉ. शिवदयाल पटेल

सहायक प्राध्यापक हिन्दी,

शासकीय महाविद्यालय बरपाली,

जिला–कोरबा **[छ.ग.] भारत**

पारम्परिक बिम्ब परोक्ष अनुभव से सम्बद्ध होते हैं। इन बिम्बों का सम्बन्ध अचेतन मन के साथ होता है। डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं– ''पदार्थ के अभाव में व्यक्ति का प्रत्यक्ष ज्ञान भी मिथ्या प्रत्यक्ष कहलाता है। यह ज्ञान प्रत्यक्ष रहने पर भी मिथ्या या अवास्तविक होता है। अनेक प्रबल इच्छाएँ जो दमित होकर अवचेतन में जाकर छिप जाते हैं, मन और शरीर की व्याधियों के दुष्प्रभावों के साथ मिलकर इन्द्रियों की क्रिया में इस प्रकार विकार उत्पन्न कर देती है कि बाह्य उद्दीपन के अभाव में भी उनका (बाह्य उद्दीपन का) प्रत्यक्ष ज्ञान होने लगता है।

पारम्परिक बिम्बों के निर्माण का आधार मन में उत्पन्न होने वाली वासनाएँ है। मनुष्य की दमित वासनाएँ उसके अवचेतन में में जाकर संकलित हो जाती है। यहाँ से ये नाना प्रकार के छद्म रूप धारण कर दिवास्वप्न तन्द्रा–स्वप्न आदि में व्यक्त होते रहती है। विकृति जब गहरी और अधिक स्थायी हो जाती है, तो ये दमित वासनाएँ ही छद्म रूपों में अभिव्यक्त होती है। पारम्परिक बिम्बों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया गया है–

1. आद्य बिम्ब
2. स्वप्न बिम्ब
3. पौराणिक बिम्ब
4. ऐतिहासिक बिम्ब

आद्य बिम्ब :

आद्य बिम्ब की प्रथम संकल्पना मनोविश्लेषण शास्त्री आचार्य युंग ने की। आद्य बिम्ब का विवेचन करते हुए युंग लिखते हैं– ''सामूहिक अचेतन, चेतना का एक अंग है: वैयक्तिक अचेतन से इसका अभावात्मक भेद यह है कि उसकी तरह इसका निर्माण व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर नहीं होता और इसलिये यह व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होता। व्यक्तिगत अचेतन का निर्माण जहाँ अनिवार्यत: ऐसी सामग्री से होता है जो किसी समय चेतन अनुभव का विषय था किन्तु अब विस्मृत अथवा दमित होकर चेतन मन से विलुप्त हो गई, वहाँ सामुहिक अचेतन की सामग्री चेतन मन का विषय और व्यक्तिगत अनुभव सम्पत्ति कभी नहीं बनती, वरन् पूर्णत: आनुवंशिकता पर ही निर्भर करती है। व्यक्तिगत अचेतन में अधिकतर ग्रंथियाँ ही निहित रहती है, जबकि सामूहिक अचेतन का निर्माण केवल आद्य बिम्बों से होता है।[2]

आद्य बिम्ब सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हैं क्योंकि इनमें मानव–चेतना से संबंधित ऐसे रूपों के अस्तित्व का संकेत मिलता है जो शाश्वत होते हैं। आद्य बिम्बों के सर्वप्रथम उदाहरण हमें आदिम जाति की विद्या, पुराकथाओं एवं परियों की कहानियों में मिलते हैं। यही कारण है कि आदिकालीन मानव ने सूर्य, चन्द्रमा, बादल, वर्षा आदि को केवल प्राकृतिक उपादान ही नहीं माना, बल्कि अपने अवचेतन के माध्यम से इन्हें सूर्य, नगेन्द्र आद्य बिम्बों के निर्माण की प्रक्रिया के विषय में लिखते हैं–''प्राकृतिक घटनाओं के चारों ओर इसी प्रक्रिया से पहले आद्य बिम्बों का और फिर पुराकथाओं का ताना–बाना बुनता चला गया और वे आद्य बिम्ब मानव–जाति के सामूहिक अचेतन की सार्वभौम तथा सार्वकालिक सम्पत्ति बनते गयें युग–युग के और देश–देश के मानव के अचेतन मन में ये आद्य बिम्ब वंशानुक्रम में– जन्म में ही, वरन् जन्म के पहले से ही विद्यमान रहते हैं और अनेक रहस्यमयी विधियों के द्वारा उसके मनोव्यापार को प्रभावित करते रहते हैं।

स्वप्न बिम्ब–

स्वप्न–बिम्ब परोक्ष–अनुभव से सम्बद्ध होते हैं। हमारी दमित वासनाएँ इनके निर्माण के मूल में रहती है। स्वप्न–बिम्ब केवल निद्रा में देखे गये स्वप्नों तक ही केन्द्रित नहीं रहते, ये अर्द्ध–निद्रित स्थिति और दिवा–स्वप्न में भी निर्मित होते हैं दिवा–स्वप्न के बिम्बों में कल्पना की भूमिका प्रमुख रहती है। अर्द्ध–निद्रावस्था में हमारे प्रत्यक्ष ज्ञान–जन्य अनेक बिम्ब–संस्कार प्राय: अवचेतन मन की वक्रिय शक्तियों के द्वारा विभिन्न इंद्रियों के सन्निकर्ष

से, अनेक प्रकार के संश्लिष्ट एवं खण्डित रूपाकार धारण करते रहते हैं जब हम गहरी नींद में होते हैं, तब हमारा अवचेतन या अचेतन मन नानाप्रकार के पूर्वानुभवों के संस्कारों का संयोजन कर, चित्र–विचित्र बिम्बों का निर्माण करता रहता है।

स्वप्न–बिम्ब की एक विशेषता यह है कि स्वप्न–बिम्ब की अन्विति प्रायः शिथिल होती है और छिन्न–भिन्न भी। इन बिम्बों की योजना में क्रम और तर्क का आधार प्रायः नहीं होता। इनके निर्माण में चेतन मस्तिष्क प्रायः निष्क्रिय रहता है।

स्वप्न और कला का प्रकृत संबंध है। कई बार ऐसे दृष्टांत भी सुनने को मिलते हैं कि अनेक रचनाकारों को अपनी महान् कृति की प्रेरणा किसी स्वप्न से प्राप्त हुई थी, जैसे कॉलरिज की प्रसिद्ध रचना ''कुबलाखाँ''।

पौराणिक बिम्ब :

मनोवैज्ञानिक, चेतना के दो स्तर स्वीकार करते हैं– वैयक्तिक चेतना और सार्वभौमिक चेतना। सार्वभौमिक चेतना सभी व्यक्तियों में समान रूप से विद्यमान रहती है। सार्वभौमिक चेतना सभी व्यक्तियों में समान रूप से विद्यमान रहती है। सार्वभौमिक चेतना का यह अंश जो अवचेतन में चला जाता है, आनुवांशिक रूप में विकसित होकर, पुराण कथाओं का रूप धारण करता है। पुराण कथाओं में आद्य बिम्ब के साथ, कल्पना का मिश्रण अधिक रहता है। इसलिए पौराणिक बिम्ब सामूहिक चेतना के उन रहस्यमय और गूढ़ तत्वों को कल्पना के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं जिन्हें साधारण भाषा में कहा जाना संभव नहीं हो पाता। उदाहरण के लिये कामदेव के हाथों में फूलों का धनुष शिव का त्रिनेत्र खोलकर कामदेव को भस्म करना, दस सिर वाला दशानन, सिर पर आँखे रखने वाला कबन्ध राक्षस, सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्य इसी प्रकार के पौराणिक बिम्ब है जो प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भी देते हैं और पाठक या श्रोता के मन में संवेदना भी जागृत करते हैं।

पुराण– कथाओं से विश्व साहित्य भरा पड़ा है। भारतीय साहित्य तो इसका भंडार है ही। ग्रीक, रोमन, यूनानी और चीनी साहित्य में भी पुराण–कथाएँ कहने और लिखने की एक दीर्घ परम्परा मिलती है। पौराणिक बिम्ब रूढ़ होकर हमारे जनमानस में इस तरह उतर चुके हैं कि साधारण जन लौकिक जगत् में भी इनकी सत्यता पर संदेह नहीं कर पाता।

ऐतिहासिक बिम्ब–

मानव–जाति की अतीत की स्मृतियाँ ही इतिहास है। इतिहास और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्तमान जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इतिहास न केवल हमारे वर्तमान को नियंत्रित करता है बल्कि भविष्य की संभावनाएँ भी इंगित करता है।

भारतीय इतिहास की जड़ें अत्यंत प्राचीन काल तक जाती हैं यद्यपि इतिहास–लेखन की परम्परा यहाँ बहुत बाद में विकसित हुई। वैसे पुराण–कथाओं और महाकाव्यों में कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन अवश्य किया गया है। व्यवस्थित रूप में इतिहास लिखने का कार्य, भारत में बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ। जिस प्रकार पुराण–कथाएँ साहित्य की सर्जना में सहायक होती है, उसी प्रकार ऐतिहासिक सन्दर्भ में साहित्य को शक्ति देते हैं, और अभिव्यक्ति को नये आयाम प्रदान करते हैं। साहित्य में इतिहास, इतिहास न रहकर, वह संवेदनात्मक अभिव्यक्ति बन जाता है। यही कारण है कि डॉ. चन्द्र इतिहास दोहराने के लिए नाटक लिखना उपयुक्त नहीं मानते। उनका कहना है– ''ऐतिहासिक कथा को केवल संवादों में बांध देना ही नाटक नहीं है। कथानक तो नाटक का एक मामूली आधार है। नाटक के मूल आधार में है– संवेदना और मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति। यह अभिव्यक्ति जब सामयिक सन्दर्भों से जुड़ती है, तब सार्थकता पाती है। इसलिए नाटककार में युगबोध की सही दृष्टि का होना आवश्यक है।

आठवें दशक में ऐतिहासिक नाटकों का सृजन अधिक नहीं हुआ, पर जो थोड़े–से नाटक लिखे गये हैं, उनके ऐतिहासिक सन्दर्भ बड़े सार्थक और प्रासंगिक है। डॉ. चन्द्र के ''अक्षयवट' नाटक की कथावस्तु इतिहास पर आधारित है। इस नाटक में नन्द का चरित्र–बिम्ब द्रष्टव्य है।

यही कारण है कि साहित्यकार भी अपनी रचनाओं में, सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक व्यंजना के लिए इन पौराणिक बिम्बों का, नये–नये अर्थों में उपयोग करते हैं।

संदर्भ :

01. मुक्तिबोध, नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई–दिल्ली.

02. मेहता कमलिनी, कल्पना पाटक और यथार्थवाद, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस.

03. मैग्रेटी रेने, वर्डस एंड एमेजेस, लॉ रिवाल्युशन सरीलाइस्टी, 1929.

04. राय नरनारायण, आधुनिक हिन्दी नाटक : एक यात्रा दशक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

05. वर्मा रामचंद्र, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, इंडियन प्रेस इलाहाबाद, 1940.

06. विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, गौंदिया ग्रंथ मंदिर, संस्करण 1875.

07. सिंह डॉ. केदारनाथ, आधुनिक हिन्दी–कविता में बिम्ब विधान का विकास, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. नाएडा, उत्तरप्रदेश, 1994.

08. सिंह डॉ. बच्चन, हिन्दी नाटक, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, नवीन संस्करण 2010.

09. सिंह सुरेन्द्रनाथ, प्रसाद के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन, वाणी प्रकाशन, अंसारी रोड दिल्ली

10. स्केल्टन राबिन, द पोएटिक पैटर्न, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1956.

11. शर्मा राजनाथ, हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.

12. शांति कुमारी टी, अज्ञेय के काव्य में बिम्ब, जवाहर पुस्तकालय, 2007.

13. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, चिन्तामणि (पहला भाग), हिन्दी साहित्य सरोवर, आगरा.

14. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संवत् 2049 वि.

15. शुक्ल डॉ. देवेन्द्र, साठोत्तर, हिन्दी नाटकों के बिम्ब विधान का अनुशीलन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2011.

16. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र, काव्य चिंतन : विविध संदर्भ, विद्या विहार कानपुर, 1989.

17. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र एवं नीलम मसंद, हिन्दी नाटक और नाटककार, साहित्य रत्नालय, 1985.

18. हरिश्चन्द्र भारतेंदु, अंधेर नगरी चौपट राजा (संवत् 1938), सम्पादक गिरीश रस्तोगी.

19. राजपाल पेपर बेक्स, नई–दिल्ली, पेपर बेक्स में प्रथम संस्करण, 1986.